National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 23-03-2020; Accepted: 24-03-2020; Published: 30-03-2020
www.nationaljournals.com
Volume 5; Issue 1; 2020; Page No 20-24

नारी विमर्श के परिप्रेक्ष्य में: 'पुण्यतोया'

दयानिधि सा
सहायक प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, महात्मा गांधी स्नातक महाविद्यालय, भुक्ताजि.–बरगढ़, ओड़िशा, **भारत**

सारांश
'पुण्यतोया' एक नारी चरित्र प्रधान उपन्यास है। एक ग्रामीण नारी का सात्विक चरित्र इसमें चित्रित है। नारी को पुण्य पवित्र नदी के रूप में चित्रित करते हुए उसके संघर्षमय जीवन का सूक्ष्म चित्रण हुआ है। नारी का जीवन एक नदी के समान होता है। उसमे कितने उतार चढ़ाव उंच–नीच पहाड़,पर्वत,समतल मैदान होते हैं जिन्हें पार करती हुई वह अपने गन्तव्य स्थल समुद्र में समाहित होती है। नारी जीवन चुनौतियों से भरा हुआ होता है। नारी को अपने जीवन में अनेक घात–प्रतिघातों से जूझना पड़ता है। उसके जीवन पथ पर हर कदम पर खतरा मण्डराता रहता है। उसे समाज का लांछन, प्रताड़न,उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। नारी को अपने जीवन में अनेक भूमिका निभानी पड़ती है। कभी किसी की बेटी, कभी बहन, कभी पत्नी, कभी भाभी, कभी बहू, कभी ननद, कभी मां,कभी सास, तो दादी, जाने कितने रिश्ते नारी को निभाने होते हैं। इन रिश्तों के निर्वाह में नारी अपनी संपूर्णता पाती है, सार्थकता पाती है।

मूल शब्द: नारी विमर्श, महागाथा, परिप्रेक्ष्य, पुण्यतोया

प्रस्तावना
'पुण्यतोया' की मेघमाला यानी मेघी यानी वर्षा एक ऐसी ही नारी है जो पुण्यतोया पवित्र नदी के रूप में प्रवाहित है। उसके प्रवाह में शक्ति है, सामर्थ्य है। एक नदी जिस तरह पर्वत प्रदेश से निकलकर अनेक प्रान्तों को पार करके अन्त में सागर में समाहित होती है। उसी तरह मेघमाला भी गांव से पल बढ, कर शहर की ओर प्रस्थान करती हुई अपने जीवन लक्ष्य तक पहुंचती है। नदी का उत्पत्ति स्थल जैसा कि पहाड़ है। मेघमाला का गांव में पैदा होकर गांव के सात्विक परिवेश में पल बढ़ कर वह सुसंस्कृत होती है, नदी की तरह वह पवित्र है। उसका चरित्र उन्नत–परिमार्जित है। आत्म कथात्मक शैली में सृजित यह उपन्यास मेघमाला की आप बीती बयां करता है। मेघी पूरे उपन्यास में अपनी संघर्षमय जीवन गाथा रोचक शैली में प्रस्तुत करती है। वह अपने जीवन में अनेक घात प्रतिघातों को सहती हुई ग्रामीण संस्कारों को साथ में लेकर चलती है। यद्यपि उसे जीवन में अनेक ऐसे लोग मिलते हैं, जो उनका गलत इस्माल करना चाहते हैं, फिर भी वह हार नहीं मानती और पूरे विश्वास बोध के साथ जिन्दगी जीती है। उसके व्यक्तित्व में आत्मीयता बोध, एकात्मबोध, सात्विक जीवन बोध,नैतिक जीवन मूल्यबोध जैसे संस्कार ओत प्रोत हैं।

विषय प्रवेश – 'पुण्यतोया' की मेघमाला यानी मेघी यानी वर्षा एक ऐसी ही नारी है जो पुण्यतोया पवित्र नदी के रूप में प्रवाहित है।लेखिक नदी और नारी की संपृक्ति को मेघमाला के माध्यम से स्पस्ट करती हुई लिखती है– ''वर्षा नदी का रुप धारण करती है। नदी बाढ़ का रुप धारण करती है। बाढ़ जाकर सागर में समाहित होती है। अपने हृदय की मधुरता से वह सागर को मधुर नहीं करती। बल्कि समुद्र के अथाह ज्वार को अपने हृदय में भर कर खुद नमकीन हो जाती है।''01यौवनावस्था के प्रभातकाल में वह कल्लोल नामक एक युवक से प्यार कर बैठती है। अनजाने में ही कल्लोल के प्रति आकर्षित होती है। और उनके हृदय में कल्लोल के प्रति प्यार उमड़ पड़ता है। कल्लोल एक पढ़ा लिखा होनहार नौजवान है। कल्लोल भी मेघमाला की ओर आकर्षित होता है और दोनों प्रेम बन्धन में बन्ध जाते हैं। मेघमाला के घर में उसके मां–बाप हैं। उसकी कोई भाई बहन नहीं हैं। मेघी ही उन बूढ़े मां–बाप का सहारा है, उनके बुढ़ापे की लाठी है।

मेघमाला में आत्मीयता बोध एवं विश्वासबोध भरा हुआ है। कल्लोल के प्रति उसका पूर्ण विश्वास उसे उनकी तरफ आकर्षित करता है। कल्लोल के प्रति उसका प्यार पवित्र है, निर्मल है। मेघी कल्लोल से प्यार तो करती है पर कभी सीमा का उलंघन नहीं करती। शहरी लड़कियों की तरह खुल कर उनसे बात नहीं करती उनके साथ घुमने फिरने नहीं जाती। गांव की लड़की के रुप में गांव की लोक लाज रखती है, मन ही मन उनसे प्रेम करती है। गांव की अपनी सहेलियों के साथ मेघी तीज त्योंहार–पर्व उत्सव में शामिल होती है। यद्यपि वह पढ़ी लिखी लड़की है। फिर भी गांव के लोंगों के प्रति उसके अन्दर आदर है। वह कभी भी कम पढ़े लिखे या अनपढ़ गांव ई लोंगों की नफरत की नजर से नहीं देखती । वह गांव परिवेश के सात्विक जीवन जी रहें लोंगों की इज्जत करती है।
मेघमाला की शादी कल्लोल से बड़ी धूम धाम से होती है। मेघी उर्फ वर्षा बाबूल का आंगन छोड़ ससुराल चली जाती है। वहां उसे पति का प्यार और सासु मां का दुलार मिलता है। वर्षा अपनी सासु मां और पति कल्लोल का खूब ख्याल रखती है। मेघी और कल्लोल दोनों एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं। वर्षा अपने पति को हमेशा खुश रखना चाहती है। वह अपने और कल्लोल के बीच की विश्वास की डोरी मजबूत करना चाहती है ताकि वह किसी भी परिस्थिति में न टूटे। वर्षा रुप गुण दोनों में बहुत सुन्दर है। कल्लोल वर्षा के प्रति इतना आकर्षित है कि अपने नौकरी क्षेत्र से हर पन्द्रह दिन का इन्तेजार न करता हुआ बीच में देर रात तक घर आ जाता है। अपने पति के इस मोहाकर्षण से वर्षा लज्जित हो उठती है। लेकिन अपने पति के प्रति समर्पित भी होती है। कल्लोल मुस्कुराहट भरे स्वर में कहने लगता है– ''सभी नशा छुड़वाकर सिर्फ अपने प्यार के नशे में मुझे मदहोश कर दिया है। काम धाम छोड़कर बार बार गांव दौड़ने से तो नौकरी गई हाथ से। मां को तो मैंने झूठ बोल दिया, सच में कोई जरुरी काम छोड़ कर चला आया हूं । कवि लोग कहते हैं युवतियों के रुप माधुर्य में सुधा है, लेकिन मैं देख रहा हूं वर्षा के पास रुपामृत नहीं रुपसुरा है। उस नशे में मैंने दुनिया भुला दी है।''02
वर्षा अपने पति कल्लोल के प्रति संपूर्ण रुप से समर्पित होकर वैवाहिक जीवन को सुरम्य बनाने में जुटी हुई है। कल्लोल के जीवन में आने के बाद वर्षा मायके का प्यार –दुलार ससुराल में पाने लगती है। उसकी सासु मां उसे बहू नहीं बेटी के रुप में

रखती है, प्यार दुलार देती है। वहां ससुराल में वर्षा बहुत खुश है। पति का प्यार और सासु मां का दुलार पाकर वह स्वर्गीय सुख का अनुभव करने लगती है। शहर में भोग विलासमय जीवन जीता हुआ कल्लोल धीरे धीरे सुरा सुन्दरी की और आकर्षित होता है। शराब और शबाब का आदी हो जाने से कल्लोल का चरित्र स्खलन होने लगता है। वह वर्षा को शक की नजर से देखने लगता है। इसी बीच वर्षा के बचपन का साथी रमुभाई उसे अपनी हवस की शिकार बना लेता है। इससे वर्षा के जीवन में तूफान खड़ा हो जाता है। और उसका दाम्पत्य जीवन का महल ढहकर बर्बाद हो जाता है। वर्षा ने और उसके मां बाप ने उसकी शादी रमु भाई से कराने से इन्कार कर देने की वजह से रमु भाई बदले की भावना में आकर वर्षा की जिन्दगी बर्बाद करके रख देता है । इससे वर्षा का विश्वासबोध पूरी तरह से टूटकर बिखर जाता है, नेस्तनाबूत हो जाता है।

पति परित्यक्ता वर्षा की किस्मत ही बदल जाती है। कल्लोल उसे घर से निकाल देता है। वह दर दर की ठोकरों खाने को मजबूर हो कल्लोल चौधुरी के बच्चे की मां बनती है और सरोजिनी हैपी होम में एक बच्ची को जन्म देती है। उस बच्ची के साथ एकाकी जीवन व्यतीत करती हुई वर्षा अनेक असुविधाओं से जूझती है। रोजी रोटी के लिए एक नौकरी की तलाश करती है। एक प्राइवेट कम्पनी में ए. के. वर्मा की पर्सनल सेक्रेटरी व टाइपिस्ट की नौकरी करती हुई वर्षा अपना गुजर बसर करती है। वह अपनी बेटी बन्या को हैपी होम में ही फॉदर साइमन की देख रेख में छोड़ने को मजबूर हो जाती है। एक मां के लिए इससे बड़ी दर्दनाक बात क्या हो सकती है कि अपने जिगर के टुकड़े को किसी हैपी होम में छोड़कर एकाकी जीवन जीए। एक मायूसी भरी जिन्दगी जीती हुई वर्षा मातृत्व अवकाश लेकर घर में बच्ची की देखभाल करने की जगह ऑफिस में नौकरी करने को मजबूर है। छोटी सी बच्ची बनी मातृत्व से वंचित रह जाती है।

बनी जब बड़ी होती है तब वर्षा हैपी होम से फॉदर साइमन के पास से उसे अपने पास ले आती है। बनी अब बड़ी होकर अपने पापा के बारे में जब पूछती है, वर्षा निरुत्तर हो जाती है। इसी बीच निशीथ नाम का एक युवक उसकी जिन्दगी में आता है। जो इस मुसीबत की घड़ी में वर्षा का साथ देता है। बनी को मेन्टल शॉक लग जाता है। और डॉ. पटेल की सलाह है कि बनी के पापा का होना बहुत जरुरी है अन्यथा उसकी तबियत नहीं सुधर सकती । निशीथ बनी के पापा बनने को तैयार हो जाता है और बनी को एक नई जिन्दगी देता है। वर्षा निशीथ के इस अभिनय को कभी कभी सच मान बैठती है। निशीथ का उन्नत चरित्र वर्षा को प्रभावित करता है। वर्षा निशीथ के इस अभिनय के लिए उनके प्रति कृतज्ञ होती है।

निशीथ भाव प्रवण होकर कहने लगता है– ''अभिनय को भूल कर चरित्र के अन्दर खुद को समाहित कर देना ही अभिनेता का कमाल है, खुशी है। दुनिया में सभी लोग राजा बनना चाहते हैं। सभी लोगों की किस्मत में राज सुख नहीं लिखा होता। नाटक रंगमंच पर एक रात के लिए राजकीय वस्त्र धारण करके मन के अरमान पूरा करने का मौका मिलने से किसी का नुकसान नहीं होता। बल्कि रात गुजरने के बाद राजकीय वस्त्र उतारते समय अपनी फटी पुरानी बनियान देखकर अभिनेता खुद तकलीफ महसूस करता है, खुद का नुकसान होता है। मैंने सिर्फ एक रात के लिए राजकीय वस्त्र पहन लिया है। मुझे इतना सा सुख देने में तुम्हें इतनी तकलीफ क्यों ? विश्वास करो मैं कभी भी तुम्हे कोई तकलीफ नहीं दूंगा। यदि कभी बनी के पापा वापस आ जाते हैं, मैं चुपचाप रंगमंच से नीचे उतर जाउंगा। और यदि ऐसा न हुआ तो हमेशा के लिए बनी के पापा का नाटकीय वस्त्र धारण करने में बड़ी खुशी है।''03

अपने पहले पति के साथ काम करती हुई वर्षा अनेक मानसिक पीड़ा तथा द्वन्द्व से जूझती है। आखिर वह पर्सनल सेक्रेटेरी की नौकरी भी छोड़ देती है और रोजी रोटी के लिए 'इविनिंग स्टार' में ज्वाइन करती है। वहां निशीथ को बार–बार आता देख उसके प्रति वर्षा के मन में नफरत पैदा हो जाती है। वह सोचने लगती है कि इतना ईमानदार आदमी इस तरह की नीच हरकत किस तरह कर सकता है। वर्षा की नफरत से निशीथ का दिल टूट जाता है और वर्षा के लिए एक चिट्ठी छोड़ कर हमेशा– हमेशा के लिए कहीं चला जाता है।

वर्षा जब जानती है कि निशीथ रिसर्च वर्क के लिए इविनिंग स्टार ट्रेनिंग सेन्टर आता था, रंगरेलियां मनाना नहीं तो बहुत पछताने लगती है और खुद को कोसने लगती है। निशीथ को याद करती हुई वर्षा कह उठती है–'' तुम्हारी हर चीज मुझे पसन्द है। तुम्हारी हर मान्यता को स्वीकार करके तुम्हें महान समझ रही हूं। तुम्हारा अधूरा कार्य मैं ले रही हूं, जिसे पूरा करुंगी। मैं आज खुद को पतित अवहेलित नहीं मान रही हूं। समाज के सामने महामानव, महान महिला कहलाने का भ्रम मुझमें नहीं है। मैं आम इनसान हूं। तुम्हारी वर्षा, नदी, नारी–पुण्यतोया। हृदय की महत साधना के बीच मैं एक स्वप्न का मर्त्यलोक गढ़ रही हूं। तुम वापस लौट आओ–वापस आ जाओ।''04

मेघमाला की मां बारी–बारी से उसे समझाने लगती है कि नारी का जीवन किस तरह से नाजुक धागे से बन्धा हुआ होता है। चुनौतियों से उसकी जिन्दगी भरी हुई होती है। मेघमाला ससुराल जाने की तैयारी में जुटी हुई है। शादी के बाद ससुराल ही तो उसकी जिन्दगी है, उसका घर–संसार है। एक नई दुनिया में जाकर उसे खुद को ढ़ालना है, वैवाहिक जीवन जीना है। मेघी की मां अच्छी तरह से इन सारी बातों को बता रही है जैसा कि अक्सर हर मां अपनी बेटी को समझाया करती है। मेघी की मां परिणीता नारी के कर्तव्य से रुबरु कराती हुई कहती है–''परिणीता नारी के लिए पति ही उसका स्वच्छ दर्पण है। अपने पति की आंखों से पूरे संसार को देखती है। पति के चेहरे के रंग से अपने रुप सौन्दर्य की कल्पना करती है। अपने पहनाव ओढ़ाव को पसन्द नापसन्द को पति की आंखों में पढ़ लेती है। पति के मुंह से वह हंसती है, पति के हृदय के अन्दर अपने हृदय की भाषा सुनती है। हमारे देश में पति–पत्नी का सम्बन्ध ऐसा ही है। पत्नी अपने पति की केवल अर्धांगिनी ही नहीं अर्ध हृदयी भी है।''05

गांव की औरतों, लड़कियों में सहनशीलता भरी रहती है। वे सहनशील होती हैं। उनमें स्थिति को समझने, उसी के अनुकूल खुद को ढालने की सामर्थ्य होती है। दाम्पत्य जीवन की चक्की में नारी को पिसना पड़ता है। पुरुष वर्चस्ववादी समाज नारी की ओर हमेशा उंगली उठाता है। जब किसी की पत्नी की मौत हो जाती है तब पति तुरन्त दूसरी शाादी कर लेता है, समाज उस पर उंगली नहीं उठाता। पर जब किसी का पति मर जाता है और पत्नी दूसरी शादी करने की सोचती है तो समाज उसे बुरी नजर से देखता है, उसके चरित्र पर दाग लगने लगता है। इसी बात की ओर ईशारा करती हुई वर्षा कहती है ''देवता के गले में हर रोज नयी फूलमाला शोभा पाती है। फूल भले ही बासी हो जाते हैं देवता का गला क्या कभी सुना पड़ता है ? अनेक प्रकार के फूलों को ग्रहण करने से इसके लिए क्या कभी फूल कुंठित होते हैं देवता का गला सुशोभित करने के लिए ? पुरुष देवता है। नारी पूजा का फूल है। यही तो हमारी शास्त्र वाणी है।''06

मेघमाला की जिन्दगी तहस नहस करने के लिए या खुद मेघमाला को पाने के लिए उसी गांव का एक सरफिरा लड़का रमुभाई एक साज़िश रचता है। मेघमाला के गलत चरित्र की झूठी खबर एक गुमनाम चिट्ठी के जरिए कल्लोल चौधरी के पास भेज देता है। जिसकी वजह से मेघी की सुनहरी जिन्दगी पथरीली–कंटीली बन जाती है। कल्लोल चौधरी जब शहर में रहते हैं, वैश्यालय में जाने की बुरी आदत ड़ाल लिए होते हैं। रंग महल में जाकर वैश्याओं से रंगरिलियां मनाना उनका शौक हो गया है। कल्लोल चौधरी गलत रास्ते की ओर निकल पड़े हैं। इधर मेघमाला रमुभाई की जाल में फंस जाती है। और वैश्यालय में पहुंच जाती है। बेहोसी की हालत

में रंग महल में पहुंचकर अपनी आत्म चेतना खो बैठती है। और निशीथ नाम के एक युवक की हवस की शिकार बन जाती है। यह सब कुछ अनजाने में ही घट जाते हैं। जब मेघी की चेतना वापस आती है। तब अपने पति के पास वापस जाने के लिए व्याकुल हो उठती है। वह रमुभाई को कोसती है। और अपनी दुर्गति के लिए पछताती है।

रमु भाई बदले की भावना में आकर मेघी को देह–व्यवसाय की कीचड़ में धकेल देता है। मेघी अनजाने अनचाहे रुप में वैश्यालय की दलदल में फंस जाती है, उससे उबर नहीं पाती। वैश्यालय में एक रात गुजारने की बड़ी कीमत उसे चुकानी पड़ती है। निशीथ को जब इस बात की खबर लग जाती है, वह मेघी को अपनी जिन्दगी से बेदखल कर देता है। मेघी फॉदर साईमन के सान्निध्य में 'हैप्पी होम' में रहती है और एक शिशु कन्या को जन्म देती है। इस बच्ची को कल्लोल चौधुरी स्वीकार नहीं कर पाते और मेघी को दुष्चरित्र नारी करार देकर घर से बाहर निकाल देते हैं। मेघी अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती है पर कल्लोल उसे स्वीकार नहीं करते।

वैवाहिक जीवन के प्रभात काल में कल्लोल मेघी को प्यार करते हैं। दोनों ढेर सारी बातें करते हैं, एक–दूजे के लिए समर्पित जीवन जीते हैं। मेघी जैसी अप्रतिम सौन्दर्य से विमण्डित लड़की से शादी करके कल्लोल खुद को किस्मत वाला समझता है। मेघी अभिमान भरे स्वर में कहती हैं– ''अतीत में लज्जा नारी का आभूषण थी। अब शिक्षा ही नारी का आभूषण है। एक शिक्षित पुरुष एक व्यक्ति को शिक्षित कर सकता है– लेकिन जब नारी शिक्षित होती है तब पूरा देश साक्षर होता है, प्रगतिशील होता है। मेरे रुप सौन्दर्य के मोह में पड़कर तुमने बहुत बड़ी गलती कर दी है। यह सौन्दर्य चिरन्तन नहीं है, सर्दी के दिनों के फूलों की तरह इस सौन्दर्य की उम्र भी कुछ ही वर्षो की है। उसके बाद तुम किसे लेकर सुखी जीवन बिताओगे ?'' ;अतीत रे लज्जा नारीर भूषण थिला। एबे शिक्षा ही हेउछि नारीर भूसण। जणे शिक्षित पुरुष जणे व्यक्तिकु साक्षर करि पारे–मात्र जणे नारी शिक्षित हेले गोटाए देश साक्षर हुए। तमे भुल करि देइछ मो रुपर मोहरे पड़ि जाई। ए रुप त चिर स्थाई नुहें शील दिनिया फूल परि ए रुपर आयुस जीबन रे मात्र केइटा थर तापरे तुमे कण नेई सुखी हेब?द्ध07

पति परित्यक्ता मेघी सरोजिनी हैपी होम में शरण लेती है। वहीं बेटी बन्या को जन्म देती है, मां बनती है। मां बनने की खुशी तो उसे होती है पर कल्लोल के वहां न होने का गम उसे सताने लगता है। किसी भी तरह से वह खुद को संभालती है। अपनी नवजात बच्ची को सहारा मानकर जिन्दगी जीने का फैसला करती है। पुरुष के सहारा के बिना स्वावलम्बी बन कर अत्म निर्भर बनना चाहती है। एक प्राईवेट कम्पनी में पर्सनल एसिन्टेन्ट की नौकरी करके अपना गुजर–बसर करती है। एक असहाय पति परित्यक्ता नारी को कमजोर मान कर, उसकी कमजोरी का नाजायज फायदा उठाने के लिए आदिकन्द बाबू मोहन जैसे बाहर से ईमानदार पर भीतर से बेइमान लोग मेघी को अपनी वासना की शिकार बनाना चाहते हैं। निशीथ नाम का एक ईमानदार युवक उसे राक्षसों के चंगुल से मुक्त कराता है और अपना घर ले जाता है।

निशीथ के घर में मेघमाला अब वर्षा के नाम से रहती है। यहां वर्षा की जिन्दगी में एक नया मोड़ आता है। निशीथ एक आधुनिक चेता नेकदिल इनसान है। जो दूसरों का सम्मान करना जानता है। दूसरों की सहायता करना सहायता करना जानता है। वर्षा को इस मुसीबत से उबरने का आस्वासन देता है। वर्षा के प्रति संवदेना व्यक्त करता हुआ निशीथ कहता है, ''हमारे समाज की ऐसी पक्षपात पूर्ण नीति के चलते अनेक बेकसूर लड़कियां बेघर हो जाते हैं। समाज उन्हें पतिता की आख्या दे रहा है। जबकि पुरुषों के लिए कुछ अलग नियम है। आप मेरे घर में कुछ दिनों से रह रही हैं। इसलिए एक पति पाने की हकदार नहीं है। जबकि मुझे आसानी से एक पत्नी मिल जाएगी । समाज के इस एक तरफा नियम को मैं बदल देना चाहता हूं। इसी लिए मैं तिरस्कृत महिलाओं की विविध समस्याएं, कारण तथा इसके निराकरण को लेकर बहुत ही चिन्तित हूं। जरुरत पड़ने पर एक पति परित्यक्ता नारी को पत्नी के रुप में स्वीकार करने में मुझे कोई संकोच नहीं है।''08

यहां नारी पुरुष प्रधान समाज में महज एक कठपुतती बन कर खड़ी नहीं है। वह पुरुष के ईशारे पर नाचनेवाली पुतली नहीं है। वह अपनी किस्मत खुद बनाने वाली हिम्मतवर नारी है, जो अपनी जिन्दगी खुद संवारती है, गढ़ती है। बचपन से लेकर शादी शुदा जिन्दगी तक और कल्लोल चौधुरी से सम्बन्ध विच्छेद के बाद भी मेघमाला अनेक मुसीबतें झेलती है। बचपन में उसी गांव का एक सरफिरा लड़का रमु भाई मेघमाला को तंग करता है, उसे प्यार के जाल में फंसाना चाहता है, पर मेघमाला उसके झांसे में नहीं आती। वह अपनी पढ़ाई पे ध्यान देती है और बड़ी होकर आगे की पढ़ाई के लिए शहर चली जाती है। शहर में पढ़ाई पूरी हो जाने के बाद मेघी की शादी तय होती है। कल्लोल चौधुरी के साथ शादी करके मेघी बहुत खुश रहती है। रमु भाई द्वारा उसकी बेइज्जती कराए जाने पर कल्लोल चौधुरी उसे अपनी जिन्दगी से निकाल देते हैं, वह भी ऐसी परिस्थिति में कि मेघी कल्लोल के बच्चे की मां बनने जा रही है।

मेघमाला पति परित्यक्ता हो जोने के बाद रोजी रोटी की तलाश में दर–दर की ठोकरें खाने लगती है। मोहन बाबू, आदिकन्द बाबू जैसे तथाकथित सरीफ इनशान मेघमाला को सहायता करना तो चाहते हैं, पर बदले में उससे शारीरिक सुख की कामना रखते हैं। भेड़ के लिबास में ये दोनों सरीफजादे हकीकत में हैवान–बदमास निकलते हैं, जिनके चंगुल से खुद को बचाती हुई मेघी आकस्मिक रुप से निशीथ के संपर्क में आती है। मोहन बाबू की हवस की शिकार होती बड़ी मुश्किल से मेघी बचती है और ऑफिस से बेतहासा भागती हुई रास्ते पर आ जाती है। वह एक कार को लिफ्ट मांगती है, उसी पर सवार हो जाती है, क्योंकि उसे किसी भी तरह से उस राक्षस से बचना है। निशीथ अपनी कार में लिफ्ट देकर आगे निकल पड़ता है और कहां ड्रॉप करने की बात पूछता है। वह मेघी जैसे बेसहारा औरत को सहारा देता है, अपने घर में पनाह देकर एक औरत की इज्जत–आबरु को सुरक्षा प्रदान करता है।

वर्षा जीवन संघर्ष में सक्रियता पूर्वक आगे बढ़ती है, तमाम मुश्किलों का सामना भी करती हैं। उसकी बेटी बन्या को निशीथ के रुप में बाप की पहचान भी मिलती है। वर्षा को निशीथ रंजन के प्रति आत्मीयताबोध का अहसास होता है। या यों कहें कि दोनों ही एक दूसरे को चाहने लगते हैं। निशीथ के सामने वर्षा अपना दुखड़ा सुनाती हुई कहती है कि वह पतित है, पति परित्यक्ता है, समाज में उसकी कोई इज्जत नहीं है, कोई सम्मान नहीं है। समाज उसे घृणित नजर से देखता है। निशीथ क्षुब्ध हो उठता है और कहने लगता है– ''कौन कहता है तुम पतित हो। तुम तो पवित्र जान्हवी की धारा हो। नदी के वक्षस्थल में अनेक आवर्जनाओं की ढेर होती है, पर उसका पानी अपवित्र नहीं हो जाता। उसके स्पर्श से सारे पाप धूल जाते हैं। तुम्हारे पवित्र प्रेम–जल–धारा में मुझे मेरे पाप धुलवाने का मौका दो।''09

वर्षा की नौकरी जब चली जाती है, रोजी रोटी की तकलीफ मिटाने के लिए वह 'सरोजिनी हैपी होम' ज्वाइन करती है। वहां युवतियों को वैश्यावृति में लिप्त देखकर वर्षा दंग रह जाती है। वहीं उसकी मुलाकात कल्लोल चौधुरी से होती है, जो रंगमहल का आनन्द लुटाने के लिए आया हुआ है। एक दिन निशीथ रंजन को वहां से जाता हुआ देखकर वर्षा दंग रह जाती है। जिसे वह देव तुल्य सम्मान व पवित्र मानती थी, वह भी इस रंगशाला का आदी है, यह सोचकर व्यथित हो जाती है। वर्षा निशीथ के प्रति घृणाभाव रखने लगती है। निशीथ के व्यक्तित्व की सच्चाई वर्षा जान नहीं पाती और अपेक्षाकृत निशीथ के कार्यों से क्षुब्ध हो बैठती है। निशीथ के चरित्र को लेकर उसके मन में जो पवित्रता की भावना थी, वह खत्म हो गई। निशीथ को जब पता चलता है कि वर्षा उसके बारे

में इस तरह की बात सोचने लगी है, वह वर्षा का सामना नहीं कर पाता और एक चिट्ठी वर्षा के नाम पर छोड़कर कहीं चला जाता है।

वर्षा के नाम लिखी गई चिट्ठी में निशीथ का क्रन्तिदर्शी विचार मुखर है। निशीथ वर्षा को पवित्र मानता है। 'इविनिंग स्टॉर' ट्रेनिंग सेन्टर में आने–जाने वाली हर औरत वैश्या नहीं है, चरित्रहीन नहीं है। वहां की औरत भी पवित्रता ली हुई हैं। निशीथ ने पत्र में लिखा है– ''पुण्यतोया जान्हवी की पवित्र जल धारा में इस संसार के अनेक कूड़े–कचड़ों को फेंक दिया जाता है। उन कूड़े–कचड़ों को अपने हृदय में धारण करने के बावजूद वह दूषित नहीं होती, जीवन की पवित्रता नहीं होती। वर्षा यह तो तुम्हारी जिन्दगी की कहानी है। तुम्हारी ही पवित्र जलधारा में मेरे पाप की आवर्जनाओं को बलचूर्वक दबा दिया गया है। फिर भी तुम पतित–दलित नहीं हो गई हो। समाज चाहे तुम्हें कुछ भी क्यों न कहे मेरी नजर में तुम पुण्यतोया–जान्हवी हो।''10

नारी को नदी का रुप देना, नदी की पवित्रता प्रदान करना और पुण्यतोया की सज्ञा प्रदान करना लेखिका डॉ. प्रतिभा रॉय के क्रान्तिदर्शी विचारों का परम निदर्शन है। नारी को त्याग–बलिदान की प्रतिमूर्ति के रुप में चित्रित करने की बजाय आधुनिक चेता नारी के रुप में प्रस्तुत करना लेखिका का यहां अभिप्राय है। नारी ऐसी पुण्यतोया है जो मनुष्य ही नहीं सम्पूर्ण प्राणी जगत की संरचना के लिए प्रादुर्भूत है, निरन्तर प्रवाहमान है। चाहे हम नदी को पापग्रस्त करने की कितनी दुश्चेष्टा क्यों न करें, वह पापग्रस्त नहीं हो सकती। उसमें पवित्रता–सात्विकता की सरस–सलिला हमेशा प्रवाहित होती रहेगी। उसके दामन में कोई दाग लग ही नहीं सकता। वह सदा ही पाप नाशिनी जान्हवी के रुप में गतिशील बनी रहेगी और संसार के सारे पाप क्षालन करती रहेगी। वर्षा इसी पुण्यतोया की प्रतिमूर्ति है।

निशीथ भाव प्रवण होकर कहने लगता है– ''अभिनय को भूल कर चरित्र के अन्दर खुद को समाहित कर देना ही अभिनेता का कमाल है, खुशी है। दुनिया में सभी लोग राजा बनना चाहते हैं। सभी लोगों की किस्मत में राज सुख नहीं लिखा होता। नाटक रंगमंच पर एक रात के लिए राजकीय वस्त्र धारण करके मन के अरमान पूरा करने का मौका मिलने से किसी का नुकसान नहीं होता। बल्कि रात गुजरने के बाद राजकीय वस्त्र उतारते समय अपनी फटी पुरानी बनियान देखकर अभिनेता खुद तकलीफ महसूस करता है, खुद का नुकसान होता है। मैंने सिर्फ एक रात के लिए राजकीय वस्त्र पहन लिया है। मुझे इतना सा सुख देने में तुम्हें इतनी तकलीफ क्यों ? विश्वास करो मैं कभी भी तुम्हें कोई तकलीफ नहीं दूंगा। यदि कभी बनी के पापा वापस आ जाते हैं, मैं चुपचाप रंगमंच से नीचे उतर जाउंगा। और यदि ऐसा न हुआ तो हमेशा के लिए बनी के पापा का नाटकीय वस्त्र धारण करने में बड़ी खुशी है।''11

निशीथ 'पुण्यतोया' का एक क्रान्तिदर्शी चरित्र है। निशीथ लेखिका प्रतिभा रॉय जी के अभिनव चरित्र–निर्माण–कौशल का परिचायक है। समाज सेवा एवं समाज में क्रान्ति खड़ा करना उनका जीवन लक्ष्य है। वह एक अच्छी खासी नौकरी करता है, अच्छी सेलरी जो उसे मिलती है, उससे जरुरमन्द लोगों की मदद भी करता है। समाज सुधार के क्षेत्र में वह क्रान्तिकारी कदम उठाना चाहता है। रोजी रोटी के लिए नौकरी करने के साथ–साथ समाज–सेवा में खुद को नियोजित करके रखता है। समाज में नारी की दयनीय स्थिति से वह बहुत खफा है, इसमें विशेष सुधार की जरुरत पर तबज्जो देता है। नारी समाज की वैश्या वृति की समस्या पर वह रिसर्च कर रहा है, इस समस्या की जड़ तक जाना चाहता है। वैश्या वृति की दलदल से नारी समाज को बचाने के लिए बेस कदम एठाना चाहता है। नारी जीवन के इस कलंक को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए वह संकल्पबद्ध है।

मेघमाला जो अब वर्षा के रुप में अपनी नई पहचान बना चुकी है, उससे विचार–विमर्श करते हुए निशीथ कहता है,'' एक से एक मिलकर अनेक होता है। बूंद से बूंद मिलकर सिन्धु बनता है। तुम क्या कर्म–पथ पर मेरे साथ हाथ नहीं मिला सकती ? हम दोनों जितने आगे निकल पाएंगे उतना रास्ता यदि आलोकित हो सकेगा, तब वही प्रकाश आगे के अन्धेरे को दूर करने में निश्चय सक्षम होगा। इसी आत्म विश्वास के साथ मैंने इस दुस्सह कार्य में हाथ दिया है।''12 निशीथ के इस सुधारवादी रवैये से वर्षा प्रभावित होती है। वर्षा ही क्यों पाठक समाज भी निशीथ के व्यक्तित्व से प्रभावित होता है, उनका जीवन पथ अनुसरण का मन बनाने जगता है। मेघी के प्रति लिखी गई चिट्ठी में जो बात उल्लेख्य है, उससे निशीथ के मानवतावादी विचारों का खुलासा हुआ है। निशीथ लिखते हैं–''जो समाज पाप को प्रश्रय देकर पापी से नफरत करता है, उस समाज को मैं स्वीकार नहीं कर सकता।''13

आज के आत्याधुनिक युग में व्यक्ति आत्म कैन्द्रिक हो गया है। आज का व्यक्ति केवल निजी जीवन को सजाने संवारने में लगा हुआ है। वह इतना आत्म कैन्द्रिक हो गया है कि इनसानी रिश्तों को भी तार तार करने लगा है। आज पाश्चात्य सभ्यता हम पर इतनी हावी हो गई है कि हम लोगों ने हमारी सांस्कृतिक अस्मिता खोकर पाश्चात्य सभ्यता की दासता स्वीकार कर ली है। भारतीय संस्कृति में विवाह को जन्म जन्मान्तर का पवित्र रिश्ता माना जाता था। वैवाहिक–मांगलिक कार्यक्रम को पवित्र माना जाता था। इसे ईश्वर का आशीर्वाद माना जाता था और आजीवन इस रिश्ते को निभाते थे। बड़ी से बड़ी गलतियों को नजर अन्दाज करके ईश्वर के आशीर्वाद स्वरुप सम्बन्ध विच्छेद नहीं होने देते थे।

आधुनिक समाज में व्यक्ति की आधुनिकतावादी विचार–दृष्टि पर सन्देह व्यक्त करती हुई वर्षा कहती है–'' आज के आधुनिक समाज में हमारा जीवन इतना जटिल हो गया है खुद के अलावा अन्य किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता। यहां तक कि अपनी ही औलाद के जन्म दाता बाप पर भी नहीं।''14 कल्लोल चौधुरी ने उन्हें इतना बड़ा धोखा दिया है कि दूसरे किसी पुरुष पर विश्वास कर पाना वर्षा के लिए नागंवार गुजर रहा है। पुरुष जाति पर उसे अविश्वास भाव पैदा हो गया है, वह हर पुरुष को शक की निगाह से देखने लगती है। पर निशीथ उन पुरुषों में से नहीं है, जो किसी औरत को धोखा दे जाएं।

'पुण्यतोया' के रमु भाई का हृदय पूरी तरह से परिवर्तित हो जाता है। वह अपना दलाली काम छोड़ देता है। कई लड़कियों, औरतों को वैश्या वृति की दल–दल में धकेल कर उनकी जिन्दगी बर्बाद कर दी है उसने। वर्षा अब निशीथ का साहचर्य पाकर खुशहाली की जिन्दगी की शुरुआत करना चाहती है। निशीथ और वर्षा दोनों एक–दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। निशीथ वर्षा की बेटी बन्या के पापा बनने का अभिनय करते करते हकीकत में पापा बनने का निश्चय करते हैं, पर वर्षा और निशीथ दोनों ही गलत सोच समझ के शिकार होते हैं, एक–दूसरे के हो नहीं पाते। वर्षा को जब निशीथ के एक रात के कुकर्म का पता चल जाता है निशीथ वर्षा को मुंह नहीं दिखा पाता और उसकी जिन्दगी से कहीं दूर चला जाता है। निशीथ का यह पलायनवादी रवैया पाठक के हृदय में उसके लिए जगह कुछ कम कर देता है। वर्षा उसे अपने पति के रुप में अन्ततः स्वीकारती है और उसके वापस आने की राह जोहती है।

रमु भाई अंततः पश्चाताप की आग में जलता हुआ दिखाई पड़ता है। वर्षा के सामने वह माफी मांगता है और उसके उज्वल भविष्य की कामना करता है। वह वर्षा को पत्नी के रुप में स्वीकार करने का आग्रह करता हुआ निशीथ से कहता है–''बेचारी, बिना दोष से मेरे पाप कर्म के कारण उसकी जिन्दगी तहस–नहस हो गई । आप उससे सच्चा प्यार करते हैं, यह जान कर मुझे बड़ी खुशी हुई। अब वह भी अपना विचार आपको बता देगी, इसमें कोई शक नहीं है। मुझे पता है, वह किसी पुरुष के चेहरे को देखकर समय बर्बाद करनेवाली लड़की नही है। आपके सेवा–साहचर्य के लिए रोज आपके पास आने के पीछे आपके प्रति उसका प्रेमाकर्षण है।

आप किस्मत वाले हैं, आप हमारे गांव की सिर मौर को प्राप्त करने जा रहे हैं।''15

रमु भाई भले ही मेघमाला की बर्बादी का कारण बनता है, पर कालान्तर में उसका चरित्र बदल जाता है। वह अपना दलाली काम छोड़ देता है और अपने किए पर पछताने लगता है। उसका प्यार भले ही एक तरफा हो फिर भी मुघमाला के प्रति उसके हृदय में अब भी जगह है। वह अपने प्यार की कुर्बानी देता हुआ मेघमाला को दूसरे की पत्नी के रुप में देखने की हिम्मत जुटाता है। निशीथ को मेघी के लिए उचित वर के रुप में चुनता है और दोनों को विवाह के पवित्र बन्धन में बांधने की योजना बनता है, पर निशीथ पलायनवादी विचारों का शिकार होता है और कहीं चला जाता है, मेघमाला उर्फ वर्षा से आंख नहीं मिला पाता, उनका सामना नहीं कर पाता। मेघमाला निशीथ को अपना पति स्वीकारती है और उनके पुनरागमन की प्रतीक्षा में जिन्दगी गुजारती है।

निष्कर्ष

लेखिका डॉ. प्रतिभा रॉय ने इस उपन्यास में वर्षा उर्फ मेघमाला के माघ्यम से आधुनिक नारी का जो व्यक्तित्व निर्माण किया है, वह हर नारी के लिए प्रेरणास्रोत है। पति परित्यक्ता होने के बाद भी वह हार नहीं मानती और जीवन संग्राम में आगे बढती है, डट कर सारी चुनौतियां झेलती है। उसके जीवन में पुरुष प्रधान समाज द्वारा अनेक मुसीबतें खड़ी की जाती हैं, पर हर एक मुसीबत का सामना वह करती है, हार कर टूट नहीं जाती, मुसीबतों को तोड़ कर रख देती है। वह साबित कर के दिखा देती है कि नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है, उनके साथ कदम ताल करके चल सकती है। आज की नारी स्वतंत्र है, आत्म निर्भर है, पवित्र है। डॉ. बाउरीबन्धु कर के शब्दों में –''स्वाधीनता के बाद के समय के सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन प्रवाह, मानवीय प्रेम, आदिवासी जीवन प्रसंग, नारी समस्या तथा पौराणिक आख्यान आदि प्रतिभा रॉय के उपन्यासों की पृष्ठभूमि घारण किए हुए हैं। हमारे भारतीय ऐतिहासिक–सांस्कृतिक धरोहरों को लेकर उपन्यास रचने में प्रतिभा जी सिद्धहस्त हैं। हमारी ग्रामीण संस्कृति, शहरी सभ्यता, लोक व्यवहार, पारिवारिक जीवन समस्या,नारी उत्पीड़न आदि समसामयिक सामाजिक जीवन प्रसंगों का चित्ताकर्षक परिप्रकाशन उनके उपन्यासों में हुआ है।''16

कृतज्ञता ज्ञापन – इस शोध पत्र को तैयार करने में हमारे महाविद्यालय के प्राध्यापक श्री अन्तर्यामी साहू और श्री अनिल कुमार देवता तथा प्राध्यापिका श्रीमती कल्पना मिश्र का विशेष सहयोग रहा। गुरुदेव डॉ. बिहारीलाल साहू जी की प्रेरणा स्वरुप यह शोध पत्र संपूर्ण हो सका। हमारे महाविद्यालय की लाइब्रेरी से शोध विषयक सारी सामग्री जुटाने में मुझे सोहलत हुई। आप सभी के प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं।

संदर्भ सूची

01. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –01
02. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –31
03. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –201–202
04. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –278
05. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –27
06. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –33
07. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –131
08. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –132
09. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –131
10. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –13
11. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –201–202
12. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –231
13. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –257
14. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –228
15. पुण्यतोया – डॉ. प्रतिभा रॉय, आद्य प्रकाशनी भुवनेश्वर, पृष्ठ –261
16. स्वाधीनता परबर्ती ओड़िया उपन्यास–डॉ. नृसिंह चरण साहु,
17. ओड़िशा बुक ष्टोर, बिनोद बिहारी, कटक 2011, पृष्ठ–228